कल्पनाओं को लगे पंख

अंतराष्ट्रीय शिल्पी तराश रहे हैं शिलाएं

सिटी रिपोर्टर

कला किसी देश की सीमा में नहीं बंधती, वह किसी मजहब और जुबान के दायरे में भी कैद होकर नहीं रहती है। यह तो खुले आकाश में कल्पनाओं के पंख लगाकर उड़ती है। कल्पनाओं की यही उड़ान जब कभी आकार लेती है तो किसी खूबसूरत शिल्प के रूप में उभरती है, ठीक वैसे ही, जैसे इन दिनों आइंटीएम परिसर में चल रहे कलाशिविर में उभर रही है।

देश के विभिन्न प्रदेशों में बसे कला शिल्पियों के साथ-साथ विदेशों से आये आधा दर्जन शिल्पकार इस बाईस दिवसीय कला शिविर में अपनी कल्पना को शिल्प में में उतारने के लिए पत्थरों पर छैनी-हथौड़े से लेकर तमाम अत्याधुनिक उपकरणों को आजमाने में लगे हैं। उपकरणों की यह आजमाइश पूरी कलाकारों की कल्पना के रंगों और उंगलियों के इशारों पर निर्भर है।

शहर की सीमा से लगे होने के बाद भी शहरी कोलाहल से दूर स्थित परिसर के दो तरफ फैली पहाड़ियों पर पसरी हरियाली माहौल में ताजगी और कलाकारों में सृजन की स्फूर्ति भरती लगती है। शिलाओं की तरह फैले कुछ सफेद, कुछ लाल और कुछ संगमरमरी पत्थरों पर पूरी तल्लीनता के साथ भविष्य की धरोहर को गढ़ने में लगे शिल्पकार पूरी तरह कला के संसार में खोये लगते हैं। उनका ध्यान अपने काम से तभी उचटता है, जब तराशे जा रहे पत्थर को किसी खास दिशा में रखने के लिए क्रेन की जरूरत होती है। ▪ सिटी

जीवन का आधार है शांति : सिल्वी

फ्रांस की कलाकार सिल्वीयान कला शिविर में तीन अलग-अलग पत्थरों पर काम कर 'शांति का वृक्ष' को आकार देने में व्यस्त हैं। उन्हें यह विषय बेहद पसंद है। चर्चा के दौरान वे कहती हैं- शांति ही जीवन का मूल आधार है। उनके शिल्प शांति का वृक्ष के पीछे यही सोच है। इसकी प्रेरणा उन्हें तब मिली जब वे एक शिविर में सीरिया गईं थीं। कला के साथ-साथ भारतीय संगीत में गहरी दिलचस्पी रखने वाली सिल्वीयान कहती हैं- यूरोप में आपको सब कुछ मिल जायेगा पर वह भावना नहीं जो भारत में है। वे कहती हैं- शांति की तलाश एक प्रक्रिया है। ▪ सिटी

सब कुछ खुला-खुला : डेविड

ग्वालियर से ही मूर्तिशिल्प में शिक्षित और पारंगत हुए रॉबिन डेविड, जो इस शिविर के समन्वयक भी हैं, कहते हैं- यहां सब कुछ खुला-खुला है। कला संस्थानों में बहुत कुछ करने या सीखने की गुंजाइश अब कहां है? उनका कहना है- हमें कला की धरोहर को सहेजने के साथ आने वाले कल के लिए भी धरोहर देना होगी। ▪ सिटी